संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ७ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ फरवरी २०२३
वर्ष : ३२ अंक : ८ (निरंतर अंक : ३६२)
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)

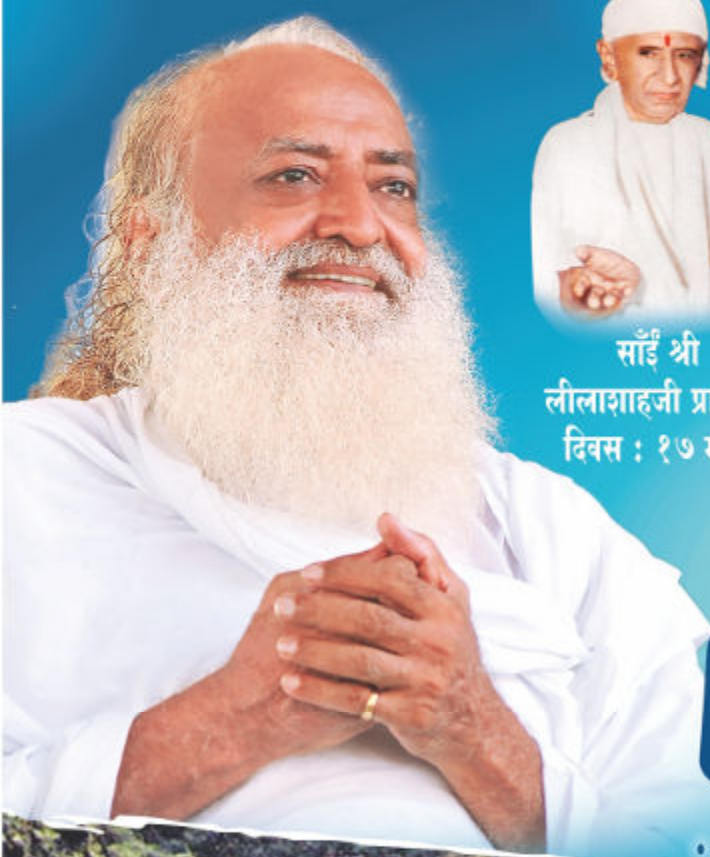

ऐसे महापुरुष मिल जायें तो कहना ही क्या ! - पूज्य बापूजी

पृष्ठ १३

साँईं श्री लीलाशाहजी प्राकट्य दिवस : १७ मार्च

राजाओं के साथ राजा, जवानों के साथ जवान, स्त्रियों के साथ पूरे उनकी प्रिय सखी जैसे और बच्चों के साथ बच्चे, मिल गये त्यागी तो बड़े त्यागी हैं, मिल गये परमहंस तो पूरे परमहंस हैं...

...सब कुछ करते हुए कभी कुछ नहीं करते हैं।

ऐसा प्रेम, वात्सल्य कि हृदय गद्गद हो जाता है

पढ़ें पृष्ठ १४

...मैंने तुरंत तम्बाकू थूक दिया। फिर उन्होंने जो कुर्ता पहना था वह उतार के मुझे अपने हाथों से पहनाया।

ऐसी तबाही में बापूजी ने हजारों की जान बचायी

पढ़ें पृष्ठ १७

पूज्यश्री ने घोषणा कर दी कि 'मेरे सारे आश्रम बेच डालने पड़ें तो बेच देंगे पर आपदा-पीड़ितों की सेवा में कोई कमी नहीं आनी चाहिए।'

होली खेलें... पर पलाश के फूलों से !

आनंद-आह्लाद, उत्साह व आरोग्य प्रदाता होलिकोत्सव होली पर्व : ६ से ८ मार्च ११

प्रकृति-अनुसार करें आहार-सेवन ३२ | दर्द-निवारक रामबाण प्रयोग ३३ | लक्ष्मीप्राप्ति हेतु करें यह प्रयोग ३३

न खोयें सुनहरा अवसर...

अब हर कोई पा सकेगा पूज्यश्री से स्पर्शित उपहार !

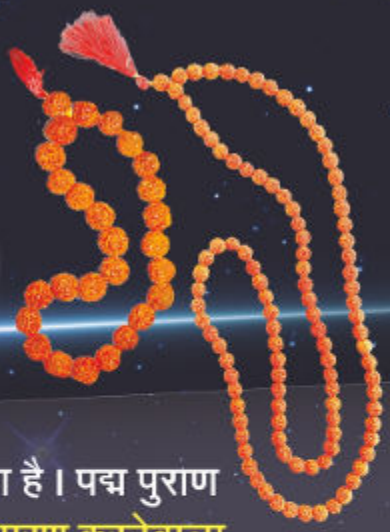

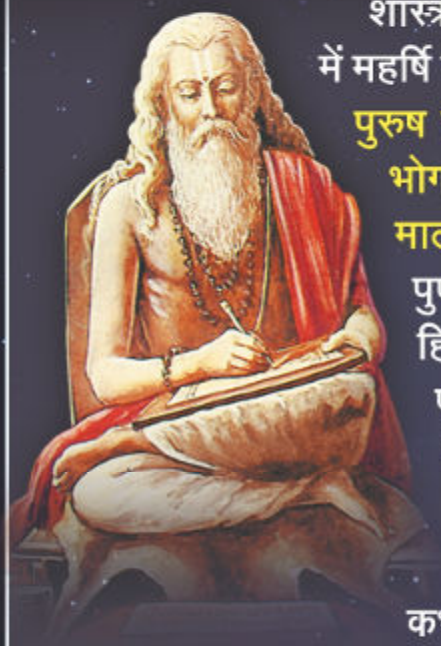

शास्त्रों में रुद्राक्ष को अत्यंत पुण्यदायी माना गया है। पद्म पुराण में महर्षि वेदव्यासजी कहते हैं : ''रुद्राक्ष की माला धारण करनेवाला पुरुष सब प्राणियों में श्रेष्ठ है। रुद्राक्ष के स्पर्श से मनुष्य स्वर्ग का सुख भोगता है और उसे धारण करने से वह मोक्ष को प्राप्त होता है। रुद्राक्ष की माला धारण कर जो पुण्यकर्म किये जाते हैं उनका अक्षय फल होता है।'' पुण्यदायी होने के साथ यह दीर्घायु-प्रदायक एवं अनेक स्वास्थ्य-हितकर गुणों से भरपूर है। यह मानसिक शक्तियों को सुविकसित कर एकाग्रता को बढ़ाता है तथा जीवनीशक्ति व रोगप्रतिकारक शक्ति की वृद्धि करता है। रुद्राक्ष वात-कफशामक, रक्तशोधक तथा उच्च रक्तचाप (high B.P.) के रोगियों के लिए वरदानस्वरूप है। जो व्यक्ति रुद्राक्ष धारण करते हैं उनको भूत-प्रेत आदि की बाधाएँ कभी परेशान नहीं करती हैं। रात को ताँबे के बर्तन में जल भरकर रुद्राक्ष के मनकों को उसमें डाल दें। सुबह मनके निकाल के खाली पेट उस जल को पीने से हृदय के रोगों, कब्ज आदि में लाभ मिलता है। रुद्राक्ष के दानों को दूध में उबाल के वह दूध पीने से स्मरणशक्ति का विकास होता है और खाँसी में भी आराम होता है। ऐसे महिमावंत रुद्राक्ष को यदि किन्हीं ब्रह्मज्ञानी महापुरुष का दिव्य स्पर्श मिल जाय तो उसमें उनके आध्यात्मिक स्पंदन व उनका कल्याणकारी संकल्प भी समाहित हो जाते हैं, जिससे वह महाप्रसाद बन जाता है। उसमें आनंद, प्रसन्नता, सुख-शांति देने व मनोकामनापूर्ति करने का विशेष सामर्थ्य आ जाता है।

ब्रह्मवेत्ता संत पूज्य बापूजी की दिव्य दृष्टि, पावन स्पर्श व दिव्य संकल्पों से सम्पन्न रुद्राक्ष मनके व जप-माला ऋषि प्रसाद के सेवाधारियों व सदस्यों को प्राप्त हो सकें इस हेतु एक कल्याणकारी योजना की शुरुआत की जा रही है। योजना इस प्रकार है :

(१) ऋषि प्रसाद/ऋषि दर्शन के सेवाधारियों के लिए : २५ सदस्य बनाने पर १ रुद्राक्ष करमाला (२७ मनकेवाली), ५० सदस्य पर २ रुद्राक्ष करमाला व १०० सदस्य बनाने पर १ रुद्राक्ष माला (१०८ मनकेवाली) प्रसादस्वरूप भेंट में दी जायेंगी।

(२) ऋषि प्रसाद के सदस्यों के लिए : ❊ ऋषि प्रसाद की आजीवन (१२ वर्ष की) सदस्यता पर पूज्यश्री से स्पर्शित रुद्राक्ष मनका (रक्षासूत्र) व ऋषि दर्शन की १ वर्ष की सदस्यता भेंटस्वरूप दिये जायेंगे।

❊ वार्षिक, द्विवार्षिक तथा पंचवार्षिक सदस्यता पर गोधूलि पैकेट दिया जायेगा।

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क : ऋषि प्रसाद मुख्यालय, अहमदाबाद, दूरभाष : (०७९) ६१२१०७१४

विश्वमानव के लिए पूज्य बापूजी का हितभरा संदेश

विश्व जागृति

मंगलमय संदेश

ऐसा है तुलसी का प्रभाव !

तुलसी-सेवन से हृदय मजबूत होता है इतना ही नहीं बल्कि रक्त की शुद्धि, रक्त के कण एवं गुर्दों की कार्यशक्ति की वृद्धि होती है, कुष्ठरोग दूर होता है, टूटी हड्डी शीघ्र-अतिशीघ्र जुड़ती है । सर्पदंश का प्रभाव तुलसी-सेवन करनेवाले पर जल्दी नहीं पड़ता, पड़ता भी है तो हलका-फुलका, फिर छू हो जाता है ।

भारत सरकार के परमाणु ऊर्जा विभाग के सेवानिवृत्त सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. मन्नेम मूर्ति का कहना है कि साधारण तौर पर एक व्यक्ति, जिसकी ५ फीट ५ इंच लम्बाई है और ६० से ७० किलो वजन है, उसकी आभा (ओरा) २.५ मीटर तक होती है, वहीं दूसरी ओर १ फीट ५ इंच लम्बाईवाले तुलसी के पौधे का वजन मुश्किल से १५० ग्राम होता है किंतु उसकी ओरा ६.११ मीटर तक होती है । कहाँ नन्हा-सा पौधा, कहाँ मोटा-सा आदमी ! कैसा है तुलसी का प्रभाव !

हाल ही में हुए एक शोध में पाया गया कि तुलसी में पाया जानेवाला एक तैलीय पदार्थ, जिसको आधुनिक वैज्ञानिक लोग 'यूजेनॉल' कहते हैं, वह कोविड-१९ के विषाणुओं को शरीर में फैलने से रोकने में सक्षम है ।

तुलसी के तो और भी बहुत कुछ गुण और महिमा हैं । तुलसी की माला गले में पहनने से रक्त-संचार भी सही रहेगा और विकार इतना दबोचेंगे नहीं । ब्रह्मचर्य में भी यह सहायक है । तुलसी के एक चुटकी बीज रात को भिगोकर रखो और सुबह ले लो तो प्रदररोग की तकलीफें, स्वप्नदोष की तकलीफें, कुकर्म करने का आकर्षण कम हो जायेगा ।

तो तुलसी पूजन कोई ऐसे ही नहीं चालू कर दिया मैंने । तुलसी के अद्भुत लाभों के शास्त्रीय प्रमाण हैं और ये तो गिनी-गिनायी बातें आपको बतायीं, इसका तो बड़ा लम्बा-चौड़ा इतिहास है ।

तुलसी का पौधा देखने में पौधा है लेकिन वह अनंत ब्रह्मांडनायक की सत्ता से विशेष सत्त्वप्रधानता से भरा हुआ है । जो कंगाल हैं, दरिद्र हैं वे भी पर्व के दिन तथा अन्य भी ऐसे दिन आते हैं जिनमें तुलसी की ९ प्रदक्षिणा करें और सुबह-सुबह तुलसी को जल चढ़ावें तो उनकी दरिद्रता दूर हो जाती है ।

तो तुलसी में औषधीय गुण भी हैं, आधिभौतिक, आधिदैविक तथा आध्यात्मिक गुण भी हैं । तुलसी का पौधा कोई आम पौधा नहीं है, यह वृंदा है, कृष्णप्रिया है, विष्णुप्रिया है । वैष्णव लोग तो कोई भी प्रसाद होगा तो उसमें तुलसी का पत्ता डाल के ही भगवान को भोग लगायेंगे या खुद सेवन करेंगे ।

जीवित व्यक्ति के आसपास तुलसी का पौधा रखो तो उसकी जीवनीशक्ति बढ़ेगी और मृतक व्यक्ति के भी नजदीक तुलसी का पौधा होगा तो उसका भविष्य चाहे कैसा भी दुःखद और खतरनाक होनेवाला हो किंतु वृंदा देवी के प्रभाव से उसकी सद्गति हो जायेगी । जहाँ वृंदाएँ खूब होती हैं उस जगह को कहते हैं 'वृंदावन' । तो जहाँ वृंदावन हो अथवा २-५ या १ भी तुलसी हो, उस स्थान के पुण्य-प्रभाव से मृतक व्यक्ति का जीवात्मा नरक का अधिकारी होने पर भी वह

उनके हरानेवाले दाँवों में भी छुपी होती है हमारी जीत !

– पूज्य बापूजी

एक लड़का संयमी था । उसने अपने पहलवान गुरु से खूब मल्ल-विद्या सीखी । गुरु ने उसकी पीठ ठोक दी : ''बेटा ! जा, **विजयी भव ।**''

वह तहसीलों में, जिलों में तो विजयी हुआ, पूरे राज्य में भी उसने डंका बजा दिया । तो वाहवाही की भूख जगी, 'मैं राज्य-विजेता बन जाऊँ, मेरे को प्रमाणपत्र मिले ।'

राजा के पास गया, बोला : ''पूरे राज्य में मेरी बराबरी का कोई पहलवान नहीं है । आप मेरे को राज्य-पहलवान घोषित कर दें, प्रमाणित कर दें ।''

राजा सत्संगी था, किन्हीं पहुँचे हुए गुरु (ब्रह्मवेत्ता महापुरुष) के चरणों में जाता था । ऐसे गुरु के सम्पर्क में जो रहते हैं वे सौभाग्यशाली होते हैं, बाकी तो संसार में पछाड़े जाते हैं । हिटलर पछाड़ा गया, सिकंदर पछाड़ा गया, सीजर पछाड़ा गया लेकिन शिवाजी महाराज नहीं पछाड़े गये, समर्थ रामदासजी के चरणों में रहते थे । हम नहीं पछाड़े जायेंगे कभी भी क्योंकि हम हमारे सद्गुरु के सम्पर्क में हैं ।

राजा ने कहा : ''पूरे राज्य में तुम सर्वोपरि पहलवान हो ? सबको हरा दिया ?''

पहलवान बोला : ''हाँ ।''

''अपने राज्य में तो तुम्हारे गुरुजी का अखाड़ा भी है । तुम्हारे गुरुजी भी अपने राज्य में ही रहते हैं । तुम उनको हराओ तब हम मानेंगे ।''

वाहवाही की लालसा ने ऐसा बिल्लौरी चश्मा★ चढ़ा दिया कि वाहवाही बड़ी लगने लगी ।

वह पहलवान अपने गुरुजी को बोला : ''गुरुजी ! अब आप तो बूढ़े हो गये हैं, हो जाय दो-दो हाथ । आपको मैं हरा देने में सक्षम हूँ । आपको हरा दूँगा तो मेरे को राज्य-पहलवान का पद मिलेगा ।''

गुरु ने देखा कि 'पहलवानी का कर्म नश्वर और पद नश्वर, यह नश्वर को पाने के लिए शाश्वत की बलि दे रहा है, मूर्ख है ।'

अब शिष्य की, भक्त की मूर्खता मिटाना गुरु का और भगवान का स्वभाव होता है ।

गुरु बोले : ''अच्छी बात है बेटे ! तुम बोलते हो तो कुश्ती कर लेते हैं पर मेरी इच्छा नहीं है । मैं तो पतला-दुबला हो गया हूँ, पहलवानी छोड़ दी, कई वर्ष हो गये ।''

''नहीं-नहीं गुरुजी ! शिष्य के लिए एक बार जरा-सा कर लो । मेरे को मेहनत नहीं करनी पड़ेगी और आप हार जाओगे ।''

''चलो, मैं हार जाऊँगा यह तो मैं नहीं कहता हूँ किंतु मैं तुम्हारे साथ चलूँगा ।''

शिष्य ने सोचा, 'गुरुजी जोर मारेंगे तो हम जरा सवाया जोर ठोक देंगे, क्या फर्क पड़ता है ! कुश्ती तो कुश्ती होती है ।'

कुश्ती हुई और गुरु ने उसे घुमा-फिरा के धरती सुँघा दी । शिष्य ने खूब कोशिश

★ बिल्लौरी काँच से बना चश्मा, जिसमें से वस्तुएँ देखने पर वे बड़े आकार की दिखाई देती हैं ।

ऐसे महापुरुष मिल जायें तो कहना ही क्या !

– पूज्य बापूजी

आप सभीको मेरे परमात्मस्वरूप पूज्यपाद भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी प्रभु के अवतरण दिवस की खूब-खूब बधाई !

आओ श्रोता तुम्हें सुनाऊँ
महिमा लीलाशाह की ।...

अद्भुत सामर्थ्य के धनी

मेरे गुरुजी में बड़ा सामर्थ्य था । मेरे को गुरुजी के श्रीचरणों में गये १-२ दिन ही हुए थे । मैंने देखा कि एक २०-२२ साल का लड़का आया, वह ऐसा दुःखी, ऐसा दुःखी... बहुत परेशान था । बोला : ''बाबा ! ऐसा हो गया, कुटुम्बियों ने ऐसा किया... ऐसा किया... ।'' उस लड़के ने अपना दुखड़ा रोया । मेरे गुरुजी चुपचाप सुन रहे थे । फिर गुरुजी को क्या पता क्या सूझी ! जरा-सा आँख खोल के उसकी ओर देखा तो वह लड़का 'ह ह ह... बाबा !' ऐसा हँसे, ऐसा कूदे, ऐसा उछले... गुरुदेव ने छुआ तक नहीं, जरा-सी दृष्टि डाली । उस समय तो मेरी बुद्धि ने काम नहीं किया, अब पता चला कि उनका जरा-सा कृपा का संकल्प था । उसीसे उसका दुःख-वुख तो छू हो गया... उसको देखें न, तो दूसरे लोग भी हँसने लग जायें इतना खुश दिखे । ऐसा खुश कि मैं अब भी उसे याद करता हूँ तो मुझे भी हँसी आती है ।

ब्रह्मलीन भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज का प्राकट्य दिवस
१७ मार्च

तो आपका स्वभाव आनंद है, प्रसन्नता है, ज्ञान है – सब कुछ भरा-भराया है । दूर नहीं है, दुर्लभ नहीं है, परे नहीं है, पराया नहीं है । कुछ समय के बाद मिलेगा, कुछ रिझायें, रोयें-धोयें तब मिलेगा ऐसा नहीं ।

दिल-ए-तस्वीर है यार !
जब भी गर्दन झुका ली, मुलाकात कर ली ।

वृत्ति को थोड़ा-सा उसमें लगा दिया... बस हो गया, मौज हो गयी ।

वे तो ठगाने के लिए घूमते हैं

भगत जगत को ठगत है, भगत को ठगे न कोई।
एक बार जो भगत ठगे, अखंड यज्ञ फल होई॥

ऐसे किसी ऋषि-मुनि के हृदय का ज्ञान अगर हम ठग लेते हैं तो बेड़ा पार हो जाता है । वे तो ठगाने के लिए घूमते हैं । तोटक ने आद्य शंकराचार्यजी को ठग लिया तो तोटकाचार्य हो गये । हमने हमारे गुरुदेव के ज्ञान को, गुरुदेव को ठग लिया तो हमारा बेड़ा पार हो गया बाबा ! और वे महापुरुष तो ठगाने में प्रसन्न होते हैं । बिल्कुल सच्चे हृदय से हम ऐसे ऋषि के चरणों में पहुँचे, जिनमें मुझे ब्रह्मर्षि के, देवर्षि के और राजर्षि के भी दर्शन हो रहे थे । जब कभी सात्त्विक प्रवृत्ति को पोषण दें और सत्त्व में बैठे रहें तो हमको लगता कि 'ये देवर्षि हैं ।' और जब ब्रह्मस्वरूप की व्याख्या करते एवं दृष्टिमात्र से हृदय में ब्रह्मानंद छलका देते तो हमको गुरुदेव ब्रह्मर्षि दिखते थे । खूब प्रवृत्ति कर रहे होते तो हम देखते थे कि 'राजर्षि जैसे हैं ।' राजकाज की, इधर-उधर की सलाह में भी बड़े

(शेष पृष्ठ २६ पर)

अब 'आर बेला नाई'

– पूज्य बापूजी

कोलकाता की एक घटना है । किसी सेठ के यहाँ दूध देनेवाली ग्वालिन आती थी । उसने दूध देने के बाद मुनीम से पैसे माँगे । मुनीम ने कहा : ''अभी थोड़ा हिसाब कर रहा हूँ, बाद में आना ।''

वह गयी, उसको जहाँ कहीं दूध देना था, देकर थोड़ी देर के बाद आयी । मुनीम व्यस्त था, उसने फिर कहा : ''थोड़ी देर के बाद आना ।''

उसको जो कुछ खरीदना था, खरीद के फिर आयी । मुनीम ने कहा : ''इतनी जल्दी क्या है, जरा बाद में आना ।''

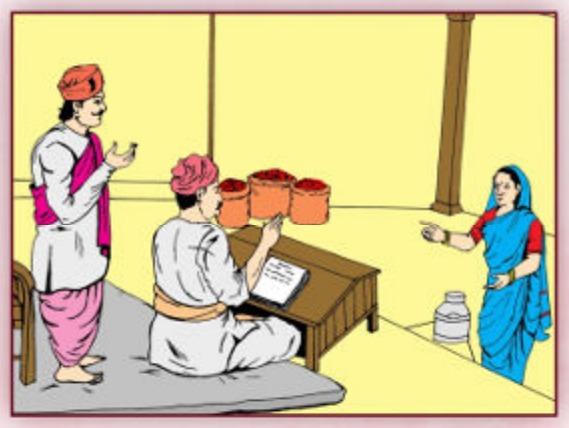

'बाद में, बाद में...' करते-करते शाम हो गयी । ग्वालिन को सूरज डूबता हुआ दिखा । उसने कहा : ''मुनीमजी ! हमको पैसा दे दो ।''

मुनीम ने कहा : ''तू चक्कर मार के आ जा । मैं इतना थोड़ा-सा काम कर लूँ फिर दे दूँगा पैसे ।''

जाकर आयी तब तक सूरज डूब गया । अब तो ग्वालिन ने मुनीम की तरफ ताका कि 'यह काम कब निपटायेगा, कब पूरा करेगा !' ग्वालिन का धैर्य टूटा और उसने झिड़कते हुए कहा : ''पैसा दे दो, अब मेरे पास समय नहीं है, जल्दी करो... पैसा दे दो ।''

उसकी झिड़कनवाली आवाज सेठ के कानों में पड़ी । ग्वालिन ने फिर कहा : ''बाबा ! पैसा दे दो । **आर बेला नाई...**'' यानी अब और समय नहीं है ।

सेठ का कोई पुण्य उदय हुआ । सेठ ने मुनीम को कहा : ''मुनीम ! **आर बेला नाई...** जिंदगी के दिन बीत गये, काम समेटो ।''

मुनीम चौंका । सेठ कहता है : ''इसमें आश्चर्य करने की बात नहीं है, उसने ठीक कहा है । मेरे भी ५० वर्ष हो गये, अब ज्यादा समय नहीं जिंदगी ।''

बहुत पसारा मत करो, कर थोड़े की आस ।
बहुत पसारा जिन किया, वे भी गये निराश ॥
क्या करिये क्या जोड़िये, थोड़े जीवन काज ।
छोड़ी-छोड़ी सब जात है, देह गेह[१] धन राज ॥
हाड़[२] बढ़ा हरिभजन कर, द्रव्य[३] बढ़ा कछु देय ।
अकल बढ़ी उपकार कर, जीवन का फल एह[४] ॥
अकल बढ़ी आत्मज्ञान पा, जीवन का फल एह ।

सेठ का पुण्य मानो उसके भीतर उभर-उभरकर प्रेरणा दे रहा है : ''आर बेला नाई ।''

'और, और, और...' नहीं, जितना है उसमें से भी समेटकर समय बचाओ ।

पानी केरा बुलबुला[५], यह मानव की जात ।
देखत ही छुप जात है, ज्यों तारा प्रभात ॥
कबिरा यह तन जात है, राख सके तो राख ।
खाली हाथों वे गये जिन्हें करोड़ और लाख ॥

मानो उसका अंतरात्मा उसको झकझोर रहा है 'अब और समय नहीं है ।'

सेठ ने कहा : ''मुनीम ! जल्दी करो, काम समेटो, अब मुझे व्यापार नहीं करना है, विस्तार नहीं करना है ।'' और वह बुद्धिमान सेठ वास्तविक सेठ होने के रास्ते चल पड़ा ।

'जितना है उतने का मैं तो क्या, मेरे पुत्र और

---

१. घर २. कुल या वंश की परम्परा से मनुष्य का गौरव या महत्त्व ३. धन ४. यह ५. पानी के बुदबुदे के समान

नमस्कार क्यों ?

(अंक ३५९ से आगे)

नमस्कार अर्थात् क्या ?

पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत में आता है : ''अब नमस्कार का अर्थ समझ लो । वैष्णव शास्त्र नमस्कार का अर्थ करता है : **न मे इति नमः ।** 'यह शरीर मैं नहीं हूँ, यह मेरा नहीं है; मन मैं नहीं हूँ, यह मेरा नहीं है और आधिभौतिक चीजें मेरी नहीं हैं... तो मैं क्या हूँ ? मैं सच्चिदानंद का हूँ, सच्चिदानंद मेरे हैं ।' इस प्रकार भक्त जो कुछ चीज लेता-देता है उसमें से 'मेरा'पन हटाता जाता है ।

देनेवाले राम, लेनेवाले राम... लोग भले यश दे दें कि 'इन्होंने यह किया है, इन्होंने इतना दिया है...' परंतु भक्त समझता है कि 'मैं आया था तो अंग पर कपड़ा भी नहीं था और जाऊँगा तो शरीर भी छोड़कर जाऊँगा, यह तो तेरी रहमत है कि तेरी दी हुई चीज मेरे द्वारा तू काम में लगवा रहा है ।' ऐसा अगर विचार करता है तो वह उत्तम दाता है और उत्तम फल को पाता है । इसलिए जो कुछ काम करो, ईश्वर को मन-ही-मन नमस्कार करके करो - **न मे इति नमः ।** यह मेरा नहीं । 'हे प्रभु ! सेवा मैंने नहीं की, यह तो तूने अवसर दिया । 'ध्यान, जप मैंने किया... दान-पुण्य मैंने किया... ।' ना-ना... यह तेरी चीज तूने मेरे द्वारा दिलवायी है, इसमें मेरा बड़प्पन किस बात का है ? यह तो तेरी बड़ाई है ।' इस प्रकार का अगर आपका चिंतन रहता है तो आपका कीर्तन, जप सतत हो जायेगा ।

तो वेदांत मत में नमस्कार का अर्थ क्या है ? कि जहाँ-जहाँ दृष्टि जाय वहाँ-वहाँ नाम-रूप की गहराई में ईश्वर का अस्तित्व देखें । पंखा, बल्ब... जो भी उपकरण देखें, उसकी गहराई में उसे चलानेवाली सत्तास्वरूप बिजली का हमें ज्ञान हो । ऐसे ही **सबकी गहराई में परमेश्वर-तत्त्व का ज्ञान होना यह वेदांतिक नमस्कार है, वैदिक ढंग का, वेदांतिक शास्त्रों का नमस्कार है ।** भगवान के स्वभाव का कीर्तन करना ॐ शरणागत भक्तों का नमस्कार है ।

संस्कृति विज्ञान

भारतीय संस्कृति की सुंदर व्यवस्था

हमारी उँगलियों के नुकीले भागों द्वारा जीवन की आभा (ओरा) बिखरती रहती है । जब दोनों हाथ जोड़ते हैं तो एक वृत्त (circle) बनता है, जिससे आभा का बिखरना तो रुकता है, साथ-साथ में हमारा अहं और हमारा चिंतन शांत होता है । कुछ लोग आपस में मिलते हैं तो अंग्रेजी पद्धति के अनुसार एक-दूसरे से हाथ मिलाते (हैंडशेक करते) हैं । लेकिन यह ध्यान में रखना चाहिए कि हर मनुष्य के अपने संस्कार, अपने बीमारी के जीवाणु आदि होते हैं । एक-दूसरे को उन जीवाणुओं का या हलके परमाणुओं का संक्रमण न हो, वे ध्यान-भजन में कमी न लायें, इस दृष्टि से भारतीय संस्कृति को माननेवाले लोग हाथ मिलाने से परहेज करते हैं । अभिवादन द्वारा भीतर किसी कोने में जो अहं छुपा है वह पिघल जाय, ऐसा नहीं कि हमारी बीमारी दूसरे को लग जाय । इसलिए हमारे यहाँ हाथ न मिलाकर हाथ जोड़ते हैं । (जब कोरोना जैसे संक्रामक रोग फैलते हैं तब विदेशियों को भी न चाहने पर भी हाथ मिलाने से परहेज करना पड़ता है और भारतीय संस्कृति की दूरदर्शिता का आदर करना पड़ता है ।) यह पद्धति स्वास्थ्य के लिए, मन की

हुई किडनी की भयंकर बीमारी लेकिन गुरुकृपा रही प्रारब्ध पर भारी

मुझे बी.पी. व कोलेस्ट्रॉल ज्यादा होने की शिकायत रहती थी । १९९९ की बात है । पूज्य बापूजी रजोकरी आश्रम में पधारे थे । मैं वहाँ गया तो बोले : ''सुन, तू खान-पान में लापरवाही करता है । तेरे गुर्दों की दशा ठीक नहीं है । तू पुनर्नवा (साटोड़ी) का सेवन शुरू कर दे तो गम्भीर स्थितियों में भी बच निकलेगा ।''

मैंने कहा : ''गुरुदेव ! मैं तो हर ६ महीने में चेकअप कराता हूँ, गुर्दों की कोई खराबी कभी रिपोर्ट में नहीं आयी ।''

''अरे, स्थूल परिवर्तन होने पर ही टेस्टों, मशीनों आदि से बीमारी का पता चल पाता है पर योगियों, महापुरुषों की सूक्ष्म दृष्टि सूक्ष्म-से-सूक्ष्म और भावी चीजों को भी भाँप लेती है । समझता है ? तू स्वास्थ्य पर ध्यान देना ।''

''जी, ठीक है ।''

मैंने आज्ञानुसार पुनर्नवा-सेवन शुरू किया और व्यवसाय व सेवा-साधना में रत रहने लगा ।

२००१ की जाँच में पता चला कि मेरा क्रिएटिनिन (creatinine) २.३ हो गया है और गुर्दे सिकुड़ गये हैं । बार-बार बुखार आता था, जिसमें सर्दी भी लगती थी । काफी इलाज कराने पर, महँगी-महँगी अंग्रेजी दवाइयाँ लेने पर भी बुखार पूर्णरूप से ठीक नहीं हो रहा था । इस पर गुरुदेव ने मुझे एक प्रयोग बताया और मंत्र भी दिया । उस प्रयोग से बुखार पूरी तरह ठीक हो गया ।

कुछ समय बाद क्रिएटिनिन बढ़ते-बढ़ते १२ हो गया, शरीर पर सूजन थी । अमृतसर के एक बड़े अस्पताल में रिपोर्ट्स दिखायीं तो डॉक्टर ने कहा : ''इससे आधा भी क्रिएटिनिन हो तो डायलिसिस करवाना पड़ता है । इस हालत में तो व्यक्ति खड़ा भी नहीं हो पाता लेकिन आप तो चल-फिर रहे हो ! यह कैसे ? अब किडनी ट्रांसप्लांटेशन के अलावा कोई विकल्प नहीं है ।''

मैंने कहा : ''बस, मेरे गुरुदेव की कृपा से सब चल रहा है ।'' पूज्य बापूजी मेरे तीव्रतम अर्थात् अटल प्रारब्ध भोग में भी मेरे जीवन की कमान सँभाले हुए थे ।

गुरुदेव को मैंने किडनी ट्रांसप्लांटेशन के बारे में बताया तो पूज्यश्री ने ऑपरेशन के २-३ दिन पहले आश्रम के वैद्यों द्वारा प्रसाद-बूटी भिजवायी । गुरुकृपा से ऑपरेशन निर्विघ्न सम्पन्न हुआ । प्रोटीन्स की कमी होने से डॉक्टरों ने रोज ६ अंडे खाने को कहा । मैंने कहा : ''मैं अंडे छूता तक नहीं, खाना तो बहुत दूर की बात है ।''

उस दिन गुरुदेव ने दूरभाष द्वारा यह बात जानी तो बोले : ''मूँग की दाल का पानी पीना, सब ठीक हो जायेगा । दूसरा, तू मौन का आश्रय लेना, जानता है न मौन की कितनी महिमा होती है ! इससे गजब का स्वास्थ्य-लाभ होगा और आयुष्य भी बढ़ेगा । ऐसे ऑपरेशन के बाद लोग १५-२० दिन के बाद ही चल पाते हैं लेकिन देखना, तू ऐसा करेगा तो ३-४ दिन में ही चलने लगेगा ।'' और हुआ भी ऐसा ही !

मूँग की दाल का २०० मि.ली. पानी पीनेमात्र से पूरे शरीर की सूजन गायब हो गयी । डॉक्टर चकित हो पूछने लगे तो उन्हें यह प्रयोग बता दिया । फिर क्या था,

शाहाबी व जाहिदी खजूर पोषक तत्त्वों से भरपूर, सेहत का खजाना

ये वात-पित्तशामक एवं १४० प्रकार की बीमारियों को जड़ से उखाड़नेवाले हैं। शर्करा, प्रोटीन्स, कैल्शियम, पोटैशियम, लौह, मैग्नेशियम, फॉस्फोरस, रेशों (fibres) आदि से भरपूर हैं। तुरंत शक्ति-स्फूर्ति देनेवाले ये खजूर रक्त-मांस, वीर्य व कांति वर्धक होने के साथ-साथ कब्जनाशक तथा हृदय व मस्तिष्क के लिए बलप्रद हैं। इनका सेवन बारहों महीने कर सकते हैं।

सिनर्जी हॉट व कोल्ड ड्रिंक उत्तम होमियोपैथिक औषधियों का सुंदर समन्वय

✻ यह एक ऐसा प्राकृतिक एनर्जी ड्रिंक है जो आपके पूरे परिवार को दिनभर दे स्फूर्ति व करे स्वास्थ्य-सुरक्षा ✻ चाय की लत छुड़ाने और उसके दुष्प्रभावों से बचने हेतु चाय का एक उत्तम विकल्प ✻ मस्तिष्क की कार्यक्षमता व एकाग्रता बढ़ाये।

संतकृपा गोलियाँ हानिकारक रसायनों से रहित व प्राकृतिक औषधियों से युक्त

तुलसी गोली } यह गोली तुलसी और त्रिकटु के मिश्रण से युक्त है। ये औषधियाँ सर्दी, जुकाम, खाँसी आदि कफ-संबंधी रोग एवं भूख की कमी को दूर करने में सहायक हैं।

साथ में पायें जायकेदार एवं विभिन्न लाभों से युक्त पुदीना व संतकृपा चूर्ण गोलियाँ

आँवला कैंडी बच्चों को बाजारू टॉफियों से बचाने हेतु स्वास्थ्यवर्धक उत्तम विकल्प

पुष्कर आश्रम गौशाला से जुड़ी जंगल की शुद्ध भूमि, जो गोधूलि, गौ-खाद, अन्य शुद्ध खाद, अत्यंत शुद्ध जल से सम्पन्न है, उसमें उपजे ताजे आँवलों से तैयार की गयी यह कैंडी स्वास्थ्य एवं साधना में सहायक है। यह स्वादिष्ट, शक्तिप्रद एवं विटामिन 'सी' से भरपूर है।

NOURISH विटामिन B12 टेबलेट Prebiotic

✻ जीवनीय तत्त्वों, अमीनो एसिड्स, खनिजों से भरपूर ✻ विटामिन B12 की कमी से उत्पन्न होनेवाली अनेकों गम्भीर समस्याओं से सुरक्षा देनेवाली ✻ पाचनशक्तिवर्धक ✻ प्रौढ़ावस्था व वार्धक्य में विशेष हितकारी ✻ गुटखा, तम्बाकू आदि की लत छुड़ाने के लिए इसे चूसकर लेना हितकर है।

स्वास्थ्यप्रद व गुणकारी पलाश-फूलों का रंग

स्वास्थ्य-घातक केमिकल रंगों से बचें-बचायें

✻ सप्तधातुओं व सप्तरंगों को करे संतुलित ✻ सूर्य की तीक्ष्ण किरणों के दुष्प्रभाव से करे रक्षा ✻ रोगप्रतिकारक शक्ति तथा गर्मी सहने की शक्ति को बढ़ाये ✻ कफ, पित्त एवं वायु-संबंधी ८० प्रकार की बीमारियों व सकष्ट मूत्र-प्रवृत्ति का नाशक।

कोरोना-संक्रमण से सुरक्षा हेतु रोगप्रतिकारक शक्ति वर्धक औषधियाँ

स्पेशल च्यवनप्राश केसरयुक्त फेफड़ों के लिए बलप्रद

सोना, चाँदी, लौह व ताँबा सिद्ध जल में उबले हुए वीर्यवान आँवलों में ५६ से भी अधिक बहुमूल्य जड़ी-बूटियों के साथ चाँदी, लौह, बंग व अभ्रक भस्म एवं शुद्ध केसर मिलाकर बनाया गया विशेष च्यवनप्राश !

निरापद वटी

यह संक्रमण का नाश कर तद्जन्य बुखार, कफ, खाँसी, कमजोरी आदि लक्षणों से शीघ्र राहत दिलाती है।

संशमनी वटी

संक्रामक रोगों से रक्षा करती है। बुखार, खाँसी, सर्दी, बीमारी के बाद की कमजोरी, खून की कमी आदि में लाभदायी है।

घृतकुमारी (Aloe vera) व नीम युक्त हरि ॐ हैंड सैनिटाइजर

९९.९ % कीटाणुओं को तुरंत नष्ट करने में सक्षम !

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है। अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : (०७९) ६१२१०७६९. ई-मेल : contact@ashramestore.com

पूज्य बापूजी के द्वार, उत्तरायण की बहार !

सुसम्पन्न हुआ अ.भा. वार्षिक ऋषि प्रसाद-ऋषि दर्शन सम्मेलन

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2021-23
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2023)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/21-23
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2023)
Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month.
Date of Publication: 1st Feb 2023

ऋषि प्रसाद की पालकी

पादुकाजी व ऋषि प्रसाद शोभायात्रा

ध्यान

ऋषि प्रसाद व ऋषि दर्शन

सेवा का संकल्प

लोक कल्याण सेतु

ध्यान की गहराइयों व प्रेमाभक्ति से ओतप्रोत विरहयुक्त भाव-भंगिमाओं की झलकें

ध्यान योग शिविर, सूरत

ऋषि प्रसाद की ज्ञान-गंगा कर-कर व घर-घर में

चित्रदुर्गा (कर्नाटक)

सूरत

वाराणसी

आदिलाबाद (तेलंगाना)

तुलसी देवी का हुआ देश-विदेश में पूजन

लखनऊ

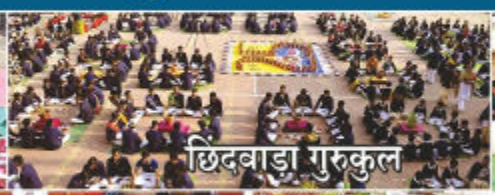
छिंदवाड़ा गुरुकुल

कवर्धा (छ.ग.)

जनकपुर (नेपाल)

यींगकियांग (अ.प्र.)

ब्रैम्पटन (कनाडा)

सैन जोस-कैलिफोर्निया (यू.एस.ए.)

औरंगाबाद (महा.)

रजोकरी-दिल्ली

भावनगर

एडमोंटन (कनाडा)

मोतीहारी (बिहार)

लड्डूगाँव, जि. कालाहांडी (ओड़िशा)

हैदराबाद

दुबई

करंजे, जि. सातारा (महा.)

सम्बलपुर (ओड़िशा)

बिनका गुरुकुल (ओड़िशा)

सैन मार्टिन (यू.एस.ए.)

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक** : धर्मेश जगराम सिंह चौहान **मुद्रक** : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पाँटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : श्रीनिवास र. कुलकर्णी